जून 2025
अंक 5

अंतरदेश

सरहदों के पार हिंदी का संसार

अनुवाद विशेषांक

अंतरदेश

सरहदों के पार हिंदी का संसार

अनुवाद विशेषांक

जून 2025

संपादक

हंसा दीप

यूनिवर्सिटी ऑफ टोरंटो, कनाडा

सहायक संपादक

वेदप्रकाश सिंह

ओसाका विश्वविद्यालय, जापान

परामर्श मंडल:

अडेलै हेनिश-टेम्बे, लाइप्त्सिग विश्वविद्यालय, जर्मनी
आनंद वर्धन शर्मा, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
एरिका करांति, तूरीन विश्वविद्यालय, इटली
दिव्यराज अमिय, त्युबिंगन विश्वविद्यालय, जर्मनी और ज़्यूरिख विश्वविद्यालय स्विट्जरलैंड
राम प्रसाद भट्ट, हैम्बर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी
ली यालान, बीजिंग फ़ॉरन स्टडीज़ यूनिवर्सिटी, चीन
शिव कुमार सिंह, लिस्बन विश्वविद्यालय, पुर्तगाल

स्थायी संपर्क पता:

नॉटनल, स्वत्वाधिकार © 2024
16/1454, इंदिरा नगर, लखनऊ- 226016, उत्तर प्रदेश, भारत
antardesh.patrika@gmail.com

अंतरदेश से जुड़े क़ानूनी विवाद लखनऊ उच्च न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में आएँगे। मौखिक और लिखित रचनाओं और कृतियों में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं, नॉटनल, संपादक और संपादक मंडल के नहीं।

अनुक्रम

- **संपादकीय** 4
- **कन्नड़ कहानी** - लाल लुंगी - 2025 बुकर पुरस्कार विजेता बानू मुश्ताक 8

  अनुवाद – शहादत, अक्षत जैन
- **रूसी कहानी** - दुर्भाग्य - एंटोन पावलोविच चेखव, अनुवाद - प्रगति टिपणीस 28
- **डेनिश उपन्यास अंश** - आज की बात करें - हेल्ले हेल्ले – अनुवाद - अर्चना पैन्यूली 39
- **लातिन अमरीकी कहानी**-न्यायाधीश की पत्नी - इज़ाबेल अलेंदे अनुवाद – 51

  सुशांत सुप्रिय
- **मराठी ललित निबंध** – स्पर्श - उज्ज्वला केलकर – स्व-अनूदित 67
- **गुजराती ललित निबंध** – ये जीवन है...यही है इसका रंग-रूप- डॉ.पद्मश्री प्रवीणभाई 71

  दरजी अनुवाद - रजनीकान्त एस.शाह
- **गुजराती ललित निबंध** – लीलामय पर्णों का सौन्दर्य - भगीरथ ब्रह्मभट्ट - अनुवाद: 75

  रजनीकान्त एस.शाह
- **तमिल कहानी** - प्रश्न की परछाई - एस. रामकृष्णन - अनुवाद - अलमेलु कृष्णन 79
- **उर्दू कहानी** - क़ब्र खोदनेवाला - मसऊद मुफ़्ती - अनुवाद - ख़ुर्शीद आलम 91
- **अमरीकी कविता** - रॉबर्ट फ्रास्ट - अनुवाद – रजनी मिश्रा 104
- **पंजाबी कविता** – अमरजीत कौंके - स्व-अनूदित 105

- **मराठी कविता** - जस्मिन शेख – स्व-अनूदित, मंजुषा मुले – अनुवाद - भगवान वैद्य 107
  'प्रखर', उज्ज्वला केलकर - अनुवाद – भगवान वैद्य 'प्रखर'
- **बांग्ला कविता** - सुनील गंगोपाध्याय - अनुवाद – जयश्री पुरवार 110
- **छात्र परिशिष्ट -** त्सुजी किहो - स्वार्थी का अंत बुरा 112
- **छात्र परिशिष्ट -** बाहर को! मूल - लूईसे एस्टोन - अनुवाद - आंद्रे सिमेयोन ब्रोइनिग, 113
  जर्मनी
- **जर्मन कहावतें** - प्रेम रंजन अनिमेष 114
- **रेखाचित्र:** संदीप राशिनकार

हंसा दीप

अंतरदेश के अनुवाद विशेषांक पर काम करना और अनुवाद के बारे में लिखना इसलिए भी रोमांचित कर रहा है कि हाल ही में कन्नड़ लेखिका बानू मुश्ताक़ के अंग्रेज़ी में प्रकाशित कहानी-संग्रह 'Heart Lamp' को 2025 का प्रतिष्ठित इंटरनेशनल बुकर पुरस्कार प्राप्त हुआ है। बानू जी इस पुरस्कार को पाने वाली पहली कन्नड़ और दूसरी भारतीय लेखिका हैं। इसके पहले गीतांजलि श्री को रेत समाधि उपन्यास पर इंटरनेशनल बुकर पुरस्कार से नवाज़ा गया था। विश्व में हजारों भाषाएँ और बोलियाँ अपने अस्तित्व के साथ सभ्यताओं और संस्कृतियों के विनिमय को अपने कंधों पर लेकर आपसी तालमेल बढ़ाने की महत जिम्मेदारी निभाती हैं। वैश्वीकरण, ज्ञान विज्ञान और तकनीकी विकास के कारण, आज अनुवाद की आवश्यकता पहले से अधिक है। मशीनी अनुवाद ने परंपरागत अनुवाद शैली को ठेस पहुँचाई है। भले ही आज Google अनुवाद, AI, ChatGPT जैसे स्वचालित उपकरण व्यापक रूप से उपयोग किए जाते हैं, लेकिन हमेशा ऐसा नहीं होता है कि ये मशीनें भाषा की सूक्ष्मताओं को व्यक्त कर सकें। आज भी एक सशक्त अनुवादक का सूक्ष्मता से किया गया कार्य मशीन कदापि नहीं कर सकती।

अनुवाद, मात्र शब्दों का प्रतिस्थापन नहीं, आपसी विचारों के आदान-प्रदान का एक वृहत मंच है, जहाँ वैचारिक तथ्यों-भावों का आदान-प्रदान सोच को विस्तार देता है। ये शब्दों के पीछे छिपे सभी अर्थों को व्यक्त करने के बारे में है, और कभी-कभी इसके लिए कलात्मक स्वतंत्रता की आवश्यकता होती है। मुहावरे, अर्थ, संदर्भ और भावानुभूति के बगैर अनुवाद अधूरा है। लचीले और बहुमुखी शब्दों का बाहुल्य, अनुवाद की जटिलताओं में वृद्धि करता है। विभिन्न संदर्भों में उन शब्दों के अलग-अलग अर्थ हो सकते हैं। प्रासंगिक अस्पष्टता किसी भी अनुवादक के लिए चुनौती खड़ी करती है।

अनुवाद, विभिन्नताओं को एक सूत्र में पिरोने का भरसक प्रयास है। संस्कृतियों के मेलजोल की महत्वपूर्ण कड़ी है। अनुवाद के लिए द्विभाषी कौशल और गहन समझ की जरूरत होती है। मूल रचना का मर्म कहीं खो न जाए इसके भरसक प्रयास ही बेहतर अनुवाद को जन्म देते हैं। इसके बगैर अनुवादित रचना का कचरा होने में देर नहीं लगती।

अनुवाद में सांस्कृतिक आयाम पर भी ध्यान देना जरूरी होता है ताकि यह पाठक को मूल पाठ जैसा ही लगे। इस प्रकार, अनुवादक शाब्दिक रूपों के साथ न जाकर रचना को अर्थवान बनाने के लिए मूल प्रभाव प्रदान करने का प्रयास करता है। कई अनुवादक भावानुवाद को महत्व देते हैं। इसमें उन्हें आजादी होती है कि अपनी भाषा में शब्दों को ठीक उसी तरह प्रस्तुत कर सकें जैसे मूल भाषा में हैं। नि:संदेह ये अच्छा प्रयास होता है बशर्ते मूल में आमूलचूल बदलाव न हो। इस आजादी के चलते कभी-कभी अनुवादक अंत तक कई अनावश्यक परिवर्तन कर देते हैं जो मूल में कहीं थे ही नहीं। कहीं-कहीं यह भी देखा गया कि अपनी

संस्कृति के अनुकूल रचना का अंत बदलने की आजादी भी अनुवादक ने ले ली जिसे मूल रचनाकार कभी स्वीकार नहीं करेगा।

व्यापार, उद्योग, उत्पाद आदि की आचारसंहिताओं को अंतिम रूप देने से पहले बैक ट्रांसलेशन की प्रथा भी है। खासतौर पर कानूनी कार्यवाही में, ताकि पता लगाया जा सके कि वही कहा जा रहा है जो मूल नियम है। आमतौर पर इससे लाभ होता है और अगर कहीं अर्थगत विसंगति है तो उसे दूर करने के भरसक प्रयास किए जाते हैं।

अनुवाद की एक नहीं तमाम सारी चुनौतियों के साथ अनुवादक को कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है और हर एक को अलग-अलग सुलझाना बहुत ज़रूरी है। कभी अर्थगत असमानता, तो कभी शाब्दिक अनुवाद के जाल। कभी गहन अनुभूति के लिए शब्द की तलाश, जो मिलते ही नहीं।

मुझे अपनी कक्षाओं में रोज ही शिक्षक के साथ अनुवादक का काम करना होता है। एक बार मुझसे एक छात्र ने पूछा था– "तू चीज बड़ी है मस्त-मस्त" का अंग्रेजी अनुवाद क्या होगा। बहुत आसान था इसका अनुवाद करना- "You are very good" पर क्या सौ प्रतिशत था, बिलकुल नहीं। मस्त-मस्त के समांतर अंग्रेजी में कोई शब्द खोजना बहुत मुश्किल था। "मस्त" शब्द सुनने पर जिस आनंद की अनुभूति होती है वह आनंद किसी अंग्रेजी शब्द से मिल नहीं पाया। ठीक वैसे ही "उसने मेरी गाड़ी ठोक दी।" "He/She hit my car." शब्दों में वह बात है ही नहीं जो "ठोक दी" में है। अगर सामान्य बातचीत के इन वाक्यांशों का अनुवाद अधूरा लग सकता है तो एक साहित्यिक रचना का अनुवाद कितना मूल के करीब होगा, हम अनुमान लगा सकते हैं।

भाषागत दुष्परिणामों के कई तथ्य तब भी सामने आए थे जब मैं अंग्रेजी फिल्मों के सबटाइटल्स का हिन्दी में अनुवाद कर रही थी। He-She, His-her जैसे आम शब्दों के लिए भी स्क्रीन पर देखकर तालमेल बैठाना जरूरी होता था क्योंकि हिन्दी में सिर्फ "वह" और "उस" के साथ वाक्य में लिंग निर्धारण करना पड़ता था।

कई बार शब्दों के अर्थ, संदर्भ के अनुसार बदल जाते हैं। ऐसे कई समानार्थी शब्द हैं जो हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं। संदर्भ बदलते ही उनके अर्थ बदल जाते हैं। अनुवादकों को संदर्भ के आधार पर यह पता लगाना होता है कि कौन सा अर्थ सही है। मुहावरे ऐसे भाव होते हैं जो शब्दों के शाब्दिक अर्थ से अलग अर्थ व्यक्त करते हैं और व्याख्याकार के लिए काफी चुनौतीपूर्ण हो सकते हैं।

कई बार स्थानीयकरण (लोकलाइजेशन) करने में भी बड़ा अंतर दृष्टव्य होता है। आमतौर पर ब्रेड का समानांतर शब्द रोटी है, जो आकार-स्वाद-बनावट-बुनावट कहीं से भी समान नहीं है। सच यह भी है कि इसके अलावा कोई विकल्प नहीं है। एक बड़ी समानता यही है कि पेट भरने का काम रोटी करती है, वही काम ब्रेड का भी है। इसी तरह, कॉटेज शब्द का अनुवाद हर जगह झोपड़ी किया जाता है। हकीकत ये है कि कॉटेज सर्वसुविधा युक्त, छुट्टियाँ मनाने की शानदार जगह होती है जो प्रकृति से जोड़ती है। झोपड़ी से इसका कहीं से कहीं तक कोई साम्य नहीं।

शायद यही वजह है कि अनुवाद में कई ऐसे मामले सामने आए हैं जिनमें Lost in Translation, मूल के मर्म को कहीं खो दिया गया है, बदल दिया गया है या फिर बेहतर बना दिया गया है।

इन सबके बावजूद कई अनुवादक अपना सर्वश्रेष्ठ दे रहे हैं, देते रहेंगे।